श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ९

फरवरी - २०२२

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. भयानक ..... जैसा ये संसार है ।
२. देव तथा नारकी के जीवो को ..... स्थिति नहीं ।
३. इन पचास बोल में ..... तथा हेय का विवेक सुंदर रुप से किया है ।
४. नवकार महामंत्र ही जैन श्रावक की ..... पहचान है ।
५. ..... सत् है शुद्ध पद होने से विद्यमान है ।
६. नरक में जैसे उपर उपर जायें वैसे ऊँचाई ..... होती जाती है ।
७. शूलपाणी यक्ष पूर्वभव में ..... नामक वणिक का बैल था ।
८. .....अवग्रह में मुझे प्रवेश करने की आज्ञा दिजिये ।
९. त्यागी को ..... यह मंत्रीपद के सामने बडा आव्हान है ।
१०. लोकाकाश के असंख्यातवें भाग जितने क्षेत्र में एक सिद्ध परमात्मा तथा ..... रहते हैं ।
११. ..... नियमा मर कर देवलोक में जाते हैं ।
१२. केवलज्ञान और केवल दर्शन ये सिद्धों के ..... भाव हैं ।
१३. ..... याने दो से नौ ऐसा समझना ।
१४. शीलभद्र ..... के गुण और दोष दोनों को जानते थे ।
१५. बैल मृत्यु पाकर ..... निकाय में कंबल,संबल नामक देव हुये ।
१६. आहार मार्गणा में ..... में ही मोक्ष है ।
१७. स्वयं की ..... बताने के लिये ही इन्द्र वृषभ का रुप धारण करता है ।
१८. त्ता, मुहपत्ती और ..... के बीच दो हाथ चित्त रखकर त्वरित स्वर में बोला जाता है ।
१९. तुम्हारे जैसी ..... साध्वीजी ने ऐसा विलंब करना योग्य नहीं ।
२०. ..... कर्म में भी राग खास त्यागने योग्य है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. पराये को अपना बनाने की शक्ति कौन से गुण में है ?
२. गुरुचरण बुद्धि से मुहपत्ती को दो हाथों से स्पर्श करते अनुदात्त स्वर में कौनसा अक्षर बोला जाता है ?
३. सिद्ध के जीव कितने आकाश प्रदेशों को स्पर्शते हैं, उसकी विचारण करना वह कौन सा द्वार है ?
४. क्रोध में पागल सिंह ने किसे तमाचा मारा ?
५. गौशाला तापस को क्या कह कर चिडाने लगा ?
६. आत्मा का द्रव्य प्राणों से वियोग उसे व्यवहारिक भाषा में क्या कहते है ?
७. वर्षारंभ की प्रभातबेला में हम किसकी ऋद्धि मांगते हैं ?
८. कर्म के विपाक और उसके कडवे फल भोगते हुये भी जीव किसमें भटक रहा है ?
९. सातवीं मार्गणा कौनसी ?
१०. प्रभु की मासी के पुत्र का नाम क्या था ?
११. वृद्ध पुरष किस बुद्धि के स्वामी हैं ?
१२. तेउकाय का आयुष्य कितना ?
१३. काली रात्रि में सर्प किसे दिखाई दिया ?
१४. जिनदास शेठ की पत्नि का नाम क्या था ?
१५. जिनशासन में आराधना की शुरुआत किससे होती है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. खमासमणाणं २) फुसणाय ३) पडुच्च ४) सम्मे ५) उसास ६) वासाणी ७) भुयचारी ८) अणुजाणह
९. लेसओ १०) चयंति ११) अइयारो १२) ख १३) रयणीओ १४) तत्ता १५) कम्मेण १६) लोगस्स १७) विगला
१८. कओ १९) नाणं २०) वइक्कंतो

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) वस्तुपाल	१) शीत उपसर्ग	६) चांडाल	६) कोहिनूर
२) तीर्थ	२) आयुष्य	७) वडवाई	७) विद्यादाता
३) विसलदेव के मामा	३) नाविक	८) विकलेन्द्रिय	८) प्रवचन
४) औपशमिक	४) असंज्ञि	९) सिध्ध	९) भावद्वार
५) कटपूतना	५) इन्द्रिय प्राण	१०) अशुद्ध चेतनामय	१०) सिंह

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. गर्भज मनुष्य की अवगाहना कितने गाउ है ।
२. गुरु की आशातनाये कितनी ?
३. तेइन्द्रिय का आयुष्य कितने दिन का होता है ?
४. मार्गणा के विशेष से भेद कितने ?
५. वीर प्रभु को कितने साल उपसर्ग होने वाले थे ? (इन्द्र के कहे अनुसार)
६. एक समय में उत्कृष्ट से कितने नपुंसक जीव मोक्ष में जा सकते है ?
७. मुहपत्ती की पडिलेहणा कितनी ?
८. मोक्ष तत्व की विचारणा कितने द्वारों से की जाती है ?
९. आलंभिका नगरी में वीर प्रभु ने कितनावा चोमासा किया ?
१०. चउरेन्द्रिय में कितने प्राण होते हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. चंदनबाला साध्वी शिरोमणी थे ।
२. द्रव्यप्राण आत्मा से जुडे हुए हैं ।
३. प्रभु ने सातवाँ चोमासा भद्रिका नगरी में किया ।
४. क्रोध, मान, माया, राग, परिहरुं ।
५. चंडकौशिक काल करके आठवें देवलोक में देव हुआ ।
६. लघु शांति में इसिलिये "महाजनो येन गता स पंथा " ऐसा कहा गया है ।
७. गर्भज, भुजपरिसर्प दो से नौ गाउ के होते हैं ।
८. विशेषज्ञता के ही कारण जीव को संसार सारभूत लगता है ।
९. देवों की उत्कृष्ट अवगाहना सात हाथ की होती है ।
१०. विनय नहीं हो तो मिली हुई सिद्धियाँ भी हार जायेंगे ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. तेजी को टकोर काफी होती है ।
२. मनोगप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति स्वीकारना चाहिये ।
३. जीवों की जघन्य और उत्कृष्ट आयुष्य की बात तो हमें विस्मित ही बना देती है ।
४. आज के मनुष्य के पास बुद्धि कहाँ कम है ।
५. "बुज्झ बुज्झ चंडकौशिक" ।
६. देव मर कर देव नहीं होते नारकी मर कर नारकी नहीं होते ।
७. विनय को वशीकरण कहते हैं ।
८. काला सफेद चूहा यह कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष हैं ।
९. कितनी असीम कृपा बरसी हमारे उपर ।
१०. गुरु की साक्षी में प्रगटरुप से निंदा करता हूँ ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. विद्या विनय से शोभा देती है, दृष्टांत के साथ समझाओ ।
२) चार मार्गणा जिसमें मोक्ष संभव नहीं ।
३. सुगुरु वांदणा सूत्र में "अहो-कायं-काय" इन शब्दो की विधि ।
४) शुलपाणी यक्ष का उपसर्ग ।
५. गर्भज, तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अवगाहना ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com